प्रथम वार १०००] [मूल्य एक रुपया

मुद्रक
देवकुमार मिश्र
हिंदुस्तानी प्रेस, बाँकीपुर

रानी को

सूची

प्राथमिका

"संगीत एक बात में और सबसे असहाय है कि गायक चाहे उसे जैसा कर दे। संगीतकार गीत बनाकर गायक के हाथों में सौंप कर वैसा ही दीन है, जैसा बेटी को जमाई के हाथों सौंप कर पिता। अगर भी यह मेरी लाड़ली है, पर इस पर तुम्हारा पूरा अधिकार है। सुख दोगे, सुखी होगी; दुख दोगे, दुख पायगी।"

—रवींद्रनाथ

अपने इन गीतों के विषय में भी मुझे यही विवशता निवेदन करनी है। इस विराट् विश्व में विषयों की कोई सीमित संख्या नहीं। इसलिये, यह भी संभव नहीं कि सभी विषय मेरी आत्मा की आलोक-सीमा में आ सके। जीवन और जगत की जो भी थोड़ी तत्व-वस्तुएँ मेरी अंतरात्मा में सत्य और सुंदर रूप में आ सकी हैं, मैंने उन्हे ही गूँथ कर गाया है। और, मैं कह सकता हूँ कि अपनी अभिज्ञताओं की इस छोटी-सी पूँजी को गीतों मे गा कर मुझे आनंद मिला है। लेकिन, अपनी जीवन भर की प्राप्ति का यथायथ रूप ही मेरे गीतों मे नहीं है, जैसा कि फोटोग्राफर की तसवीर में हुआ करता है।

मेरे ये गीत कला की दृष्टि से किस कोटि के हैं, यह

निश्चय करना आलोचकों का काम है। मैं दावे के साथ इतना ही निवेदन कर सकता हूँ कि वर्तमान काव्य-जगत के वादों के विवादमय वातावरण से ये दूर—बहुत दूर हैं। ये किसी खास श्रेणी के लोगों के लिये नहीं लिखे गये। जिनके दिल की दुनिया भावों की कोमलता के आघात से अभिभूत हो सकती है, जिनके अंतर के सागर में भावनाओं की लहरे आती हैं, उन्हें ये अवश्य ही आनंद देंगे, मेरा यह विश्वास है। जो दिल के बजाय सिर्फ दिमाग से सोचते हैं, उनके लिये विज्ञान आदि विषय हैं। अगर लोगों को इनसे कुछ मिलेगा, तो मुझे खुशी होगी। अगर लोग इन्हें टटोलकर खाली हाथ लौटेंगे, तो मुझे दुख नहीं होगा। और, तब मैं रोम्यॉ रोलॉ के शब्दों में कहूँगा—"ललित-कला का यह अर्थ नहीं कि स्रष्टा अपने भाव और रस को लोगों को हूबहू घोलकर पिला दे, स्रष्टा सृष्टि करता है—बोने के लिये। लगभग हर तरह की सृष्टि-प्रसव जैसा ही कार्य है कि प्रसूति को खाक भी खबर नहीं रहती कि संतान कैसी होगी। स्रष्टा तो जीवन के बीज छींटता चलता है।"

कलाकृति के लिये H. Munsterberg ने कहा है—

"And if we enjoy the great works of art, the essential function is not the individual enjoyment of our

senses and feelings, like the enjoyment in eating and drinking , no, it is the volitional acknowledgment of the will of the artist. We will with him "

और कुछ नहीं, तो इतना संतोष तो मुझे इन गीतों से है कि जीवन और जगत से मैंने दगाबाजी नहीं की। जहाँ मैंने उनसे बहुत कुछ पाया, वहाँ कुछ कम नहीं दिया। मेरी चीजें—चाहे वे जैसी हों—मेरी हैं। दुनिया ये चीजें किसी और से पाने की उम्मीद नहीं कर सकती। मेरी प्राप्ति सिर्फ मेरी हो, ऐसा नहीं कर कि मैंने उसको दुनिया के आगे बिखेर दिया। अब यह दुनिया जाने कि वह उसे किस रूप में ग्रहण करेगी।

बाँकीपुर,

अनंत चुतुर्दशी, १९९७ —हंसकुमार तिवारी

रिमझिम

प्रभात-संगीत

रात गयी, अब प्रात अमल रे

कलियों के मधु-कोष खुले नव
हास-विकल तृन, पात, कमल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

पुलकित नीले नभ का आनन
मुखरित मूक मलय, तरु, कानन
विहग-बाल गीतों में बेसुध
सुधा-स्नात जगती का आँगन
तन का ताप, कलुष चिर मन का
हरता सुरभित वात विमल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

भाग भूत की भीति गयी रे
प्रीति नयी, अब गीति नयी रे
काल की रुद्ध तिमिर-कारा पर
हुई आज की ज्योति जयी रे

चाह नयी, उत्साह नया है
प्राण पुलकमय, गात सबल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

भरता नव-जीवन का आसव
झरता है प्रकाश अभिनव नव
आज स्वर्ग-सुषमा के नीचे
सोया बुरी भावना का शव

मचल पड़े हैं सुप्त हृदय के
सद्भावना-प्रपात सकल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

प्राण, आज इस पावन क्षण मे
हर्ष और उल्लास गहन में
गा दे शुभ राग एक वह
कही बैठकर दूर—विजन मे

जीवित हो कण-कण, खिल जाये
मानव-मन-जलजात सकल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

मलिन भावनाये जग खोये
कलित कामनाये नव बोये
उस स्वर को शीतल छाया मे
विकल वासना शिशु-सी सोये

बाधाओं के विकट व्यूह पर
कर, हाँ, कर आघात प्रबल रे
रात गयी, अब प्रात अमल रे

●

जागरण-गान

जाग सोये प्राण

दीप्त वसुधा-भाल

हँस रहीं दूर्वें पहनकर ओस-मुक्ता-माल

गा रहे खग-बाल

फूल की सुरभित हँसी से डाल-डाल निहाल

आज मंगलमय सुवेला

छा रहा रवमय उजेला

विश्व-तट पर चपल प्राणों का लगा है आज मेला

पर वहाँ पर है अकेला

एक तू म्रियमाण

जाग सोये प्राण

कंठ क्यों रे क्षीण
सुप्ति-सर में सो रहा क्यों चिर-चपल मन-मीन
ले उठा निज वीण
उल्लसित स्वर में विमुग्ध इस विश्व को कर लीन
आज नव-निर्माण आये
जीर्ण-जग नव-प्राण पाये
गर्व से उद्दीप्त मानवता विजय के गान गाये
शाप हर, वरदान छाये
पिन्हा नव परिधान
जाग सोये प्राण

यह निखिल संसार
वृद्ध, युग-युग का पुरातन, मलिनता-आगार
कर सखे संचार
नवल यौवन, प्राणमय आनंद पारावार

फिर न जीवन भार होवे
दूर हाहाकार होवे
शांति का सुंदर मनोरम मुक्त मंदिर द्वार होवे
सत्य, शुभ साकार, होवे
विश्व का कल्याण
जाग सोये प्राण

हो न भय से भीत
साधना का पथ सदा काँटों भरा है मीत
हार क्या, क्या जीत
आज तो निश्चय मनाओ पुण्य-पर्व पुनीत
आज दुविधा दूर कर दो
बंधनों को चूर कर दो
ऊँघते हैं जो नयन, उनमें नया ही नूर भर दो
रक्त-रंजित क्षितिज पर हो
गूँजता नव गान
जाग सोये प्राण

एक तारा, हाय,

नभ-उदधि के तीर पर है उदय होता प्राय

क्षीण लघु द्युति-काय

किंतु, लघुता माप अपनी प्राण, तुम निरुपाय

रज-कणों से विश्व सुंदर

बूँद अगणित से समुंदर

जग क्षणिक, जीवन क्षणिक, लघुता यहाँ विस्तृत अमर पर

प्राण मेरे, जाग, जगकर

आपको पहिचान

जाग सोये प्राण

•

निर्झर-संगीत

फूट पड़ा झरना प्राणों का
टूट गयी मन की कारा रे

हृदय-गुफा में पहुंची किरणें
पहुँचा विहगों का मधु-कलरव
वेग रुद्ध युग-युग का टूटा
आज बाँध का नहीं पराभव
किरण चूमकर प्राण प्रभामय
आकुल-व्याकुल दिक्हारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

टूटी, वह टूटी चट्टानें
छूटा, छूटा कूल—किनारा
दौड पडी जग के आँगन में
प्राणों की यह पगली धारा
मैं प्लावित कर दूँगा अग-जग
गा-गाकर, लहरा-लहरा रे
टूट गयी मन की कारा रे

मुझे न बाँधो, नहीं बँधूँगा
बहने दो, कल-कल गाने दो
बहुत बटोरा है प्राणों ने
उन्हें लुटाकर सुख पाने दो
तोड़ चुका हूँ दृढ चट्टानें
छोड चुका तम का पहरा रे
टूट गयी मन की कारा रे

ले करुणा की विगलित धारा
देश-देश को बह जाऊँगा
वसुधा की छाती से लगकर
मन की बातें कह जाऊँगा
फूल खिलेंगे तट पर मेरे
वन विहँसेगा हरा-भरा रे
टूट गयी मन की कारा रे

नहीं वेग यह थक जाने का
करुणा नहीं शेष होने की
इतने प्राण, गान है मुझमें
शंका नही लेश खोने की
प्राण-प्राणमय गान-गानमय
कर दूँगा जग को सारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

जब तक युग बहता जाऊँगा
गा-गाकर कहता जाऊँगा
तोड़-फोड़कर बाधा मग को
प्राण लुटा, लुटता जाऊँगा
निकल पड़ा हूँ स्वर्ण-प्रात मे
सॉझ बिना अब क्या चारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

देखो, वहाँ दूर पर सागर
खोल खड़ा है अपना अंतर
मुझे बुलाता है—आओ, लूँ
अपनी गोदी में तुमको भर
मैं जाऊँगा, जाऊँगा मै
विहँसा लूँ जग मन मारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

ले करुणा की विगलित धारा
देश-देश को बह जाऊँगा
वसुधा की छाती से लगकर
मन की बातें कह जाऊँगा
फूल खिलेंगे तट पर मेरे
वन विहँसेगा हरा-भरा रे
टूट गयी मन की कारा रे

नहीं वेग यह थक जाने का
करुणा नहीं शेष होने की
इतने प्राण, गान है मुझमें
शंका नही लेश खोने की
प्राण-प्राणमय गान-गानमय
कर दूँगा जग को सारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

जब तक युग बहता जाऊँगा
गा-गाकर कहता जाऊँगा
तोड़-फोड़कर बाधा मग को
प्राण लुटा, लुटता जाऊँगा
निकल पड़ा हूँ स्वर्ण-प्रात में
साँझ बिना अब क्या चारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

देखो, वहाँ दूर पर सागर
खोल खड़ा है अपना अंतर
मुझे बुलाता है—आओ, लूँ
अपनी गोदी में तुमको भर
मैं जाऊँगा, जाऊँगा मै
विहँसा लूँ जग मन मारा रे
टूट गयी मन की कारा रे

सपनों का संसार नहीं अब

सचमुच जी में ज्योति जगी है

चूम किरण को गाते-गाते

बढ़ जाने की लगन लगी है

डूबा अग-जग, टूटी कारा

दौड़ पड़ी दुर्दम धारा रे

टूट गयी मन की कारा रे

•

गीत

खुल गये हृदय के बंद द्वार
पहुँची सहसा किसकी पुकार

रवि-शशि का मृदु सुखकर सुहास
फूलों की मृदु-मृदु मदिर वास
आकुल पिक-कुल के कल गायन
निर्झर का उद्धत वेग, लास

उन्नत विकास, उज्ज्वल प्रकाश
चिर मूक भाव के सरल भाष
रे, भीड लगा बैठे देखो
मेरे प्राणों के आस-पास

उर के निर्जन को गया झाँक
उस नीले नभ का मन उदार
खुल गये हृदय के बद द्वार

सुख-दुख की लहरें लोल-लोल
जीवन - सरिता पर डोल-डोल
गातीं संयम के तारों पर
जीवन की गाँठें खोल-खोल

दुर्लभ चिर-सुख के मधुर रोल
रे, पीड़ा के आँसू अमोल
प्राणो के कानों नीरवता
जाती मानो यह बोल-बोल
झंकार-मत्त हो गये आज
मानस-वीणा के तार-तार
खुल गये हृदय के बंद द्वार

दुर्गम तम के मन में अजान
चादर नीरवता निठुर तान
सोया था किस युग से जानें
खोया-सा मेरा मुग्ध प्राण

उसने किरणों का सुना गान
अपने का उसको मिला ध्यान
उसकी आँखों को मिली जोत
यह स्वर्ण-प्रात, यह मधु-विहान
अब बाधा बंधन बाँध दूर
बह चला प्राण का प्रबल ज्वार
खुल गये हृदय के बंद द्वार

बन गया हृदय दर्पण उज्ज्वल
जिसमें बिंबित दुनिया पल-पल
सुख-हास, वेदना का रोदन
दुख-दोपहरी, करुणा का जल

मन की प्याली टलमल-टलमल
छलकी, अब छलकी उबल-उबल
अंतर का मेरा यह प्रवाह
ले डूबेगा रे, विश्व सम्हल

दे गयी दूर का आमंत्रण
प्राणों को छू पगली वयार
खुल गये हृदय के वंद द्वार

यह जीवन सुंदर, पर नश्वर
कितना सीमित मेरा अंतर
अपने छोटे-से आँचल में
कितनी निधियाँ मैं लूँगा भर

सवका सोया अंतर छूकर
विहँसा दूँ वनकर किरण प्रखर
अगणित प्राणों के अमर स्रोत—
में लहराऊँ वन चपल लहर
जीवन की नश्वरता को दूँ
पहना भावों का अमर हार
खुल गये हृदय के वंद द्वार

आता धीरे वह मौन मरण
जग-जीवन पर धर प्रबल चरण

खो जायेगी यह स्वर-सरिता
सो जायेगी यह प्राण-किरण

कर ले वह नश्वर देह हरण
मुँद जायें खोकर जोत नयन
जग में मन-मन के भावों में
पाने दो मुझको अमर शरण
मेरी इस छोटी सीमा को
पाने दो अग-जग में प्रसार
खुल गये हृदय के बंद द्वार

मैं इस जग के एक किनारे
प्राणों के लघु पंख पसारे
उड़ने का आयास रहा कर
इन किरणों के साथ सवेरे
नभ मे घर-घर दीपक तारे
जल जायेंगे धीरे-धीरे

थक खोंते में आ सोऊँगा
गा-गा, उड-उड़ जग में सारे
इस प्रात-किरण के उड़ूँ साथ
संध्या-किरणों का हरूँ भार
खुल गये हृदय के बंद द्वार

पहुँची मन में जग की हलचल
भावों की छवि सुख-दुख चंचल
मन का चिर-संचित बादल-दल
लुट पड़ने को है हुआ विकल
मैं भाव-विकल, मैं गान-चपल
मै दुर्दम रे, मैं उच्छृंखल
मैं ज्योति-पुत्र युग-युग अजेय
मैं अतल उदधि का अंतस्तल
मैं विश्व-हृदय को छू लूँगा
छीनूँगा उसका सकल प्यार
खुल गये हृदय के बंद द्वार

•

उद्‌बोधन-गीत

भाव मेरे, शोर कर रे

है न सोने का समय यह
है न खोने का समय यह
अश्रु-निधियों को न भोले,
है पिरोने का समय यह
आज तो बस गीत ही गा
और सब उस ओर धर रे
भाव मेरे, शोर कर रे

चाह से यह विश्व आकुल

आह से सब चित्त व्याकुल

दीप आशा का जलाये

भटकता जग में मनुज-कुल

ले इसे चल पंख देकर

तृप्ति के उस छोर पर रे

भाव मेरे, शोर कर रे

स्नेह, सत्, सद्भाव खोकर

चिर अधूरे चाव ढोकर

मरण को देने चले हैं

लोग असफल प्राण रोकर

सफल कर, इन जीवनों को

अमर कर वह जोर भर रे

भाव मेरे, शोर कर रे

जगत यह अति विपद-संकुल
जिंदगी की राह पंकिल
हर कदम पर ही यहाँ है
कठिनता का कठिन चंगुल
तू सिखा दे पार होना
साधना की डोर धर रे
भाव मेरे, शोर कर रे

फूँक प्राणों में अभय दे
दया से भर सब हृदय दे
चिर घृणा पर प्रेम को
सर्वत्र ही सुंदर विजय दे
गान दे सब कंठ में--
मुसकान सब की ठोर पर रे
भाव मेरे, शोर कर रे

आत्म-गीत

ये फूल क्या हैं

हम हँसें तो जाय खिल कण-कण धरा का, धूल क्या है

गीत खग के

मीत, धन है क्षणिक जग के

गान मेरे

प्राण हैं रे, मरण-मग के

यह चिरंतन अमर सुर रे, भूलना क्या, भूल क्या है

फूल क्या है

चरण गतिमय

हरण दुख-भय, अजय, अक्षय

प्राण पल-पल
गानमय, मतिधीर, निर्भय
हँस पड़ें बरसे प्रलय की आग, तो ये शूल क्या हैं
फूल क्या हैं

आज रजकण
राजता बन कलित कंचन
क्या न जगती
पा हमें है स्वर्ग-नंदन
हम अमर सुख-मूल है फिर चाहना के मूल क्या हैं
फूल क्या हैं

जगत-जीवन
सतत सत् चिर मुक्त बंधन
मधुर मेरे
प्रचुर विधि वरदानमय मन
त्राणमय, कल्याणमय, कठिनाइयाँ प्रतिकूल क्या हैं
फूल क्या हैं

यह मरण रे

अमर मेरे प्राण को देता नया तन, नव चरण रे

नवल जीवन

नवल मन, नव भावना-धन

शक्ति नूतन

मुक्तिमय गति शुभ चिरंतन

तिमिर-युग पर डाल देता जागरण की नव किरण रे

अमर जीवन

आदि से अवसान तक यह समरमय, पर अजर जीवन

स्रोत यह दुस्तर, इसीका ढूँढ़ना फिर कूल क्या है

फल क्या है

●

जीवन-संगीत

मै गाऊँ
विहगों-सा बेसुध होकर
सुख पाऊँ
स्वर-सरिता से जग धोकर
काली रजनी बीते
ज्योति तिमिर को जीते
मै गा-गाकर भर दूँ
मन के प्याले रीते

हटा निशा की अलकें
दृश्य मनोहर झलकें
बंद कली-सा खोलूँ
जग की मूँदी पलकें
लाऊँ किरणें ढोकर
सारा जगत जगाऊँ
मैं गाऊँ

मैं फूलूँ
कुसुमों-सा कोमल होकर
दुख भूलूँ
सौरभ की पूँजी खोकर
कोई मुझको तोड़े
सूई से तन फोड़े
अपने कोमल कर से
माला सुंदर जोड़े

तन-मन से हो पावन
करे देव आराधन
मन के भाव मिलाकर
माला कर दे अर्पण

मैं नत होकर, सोकर
देव - चरण-द्वय छू लूँ
मैं फूलूँ

मैं छाऊँ
अति तुच्छ धूल-कण होकर
पा जाऊँ
उनके चरणों की ठोकर
जो रोकर दुख धोते
आँसू- मोती खोते
बड़े जतन से उनको
सब दिन रहूँ सँजोते

नाश छिपा लूँ उर में
हास लुटाऊँ पुर में
धन्य-धन्य हो जाऊँ
लिपट चरण-नूपुर में
अपना हृदय बिछाकर
परस सदा रख पाऊँ
मैं छाऊँ

कामना-संगीत

ऐसा धन हो

वैभव-मद अभिमान नहीं हो

नित विलासिता मत्त मलिन यह प्राण नहीं हो

ध्यान नहीं हो

प्रभुता का, प्राचुर्य, अहं का ज्ञान नहीं हो

उसे व्यर्थ जानें यदि जग-कल्याण नहीं हो

मेरा सब धन

बादल-सा बन बरसे क्षण-क्षण

बल संबल दे खिले फूल-सा करे निधन को

ऐसा धन हो

ऐसा तन हो
दुर्जय हो जो, जो बलमय हो
प्रबल पराक्रम से जिसके पीड़क-दल क्षय हो
निबल अभय हो
विश्व-बाग में बिचरें, पल-पल पर जय-जय हो
हिमगिरि-सा हो अटल मचा जो घोर प्रलय हो
माँ की जय हो
पुलकित पय हो, सुखी हृदय हो
देश-जाति का मुख उज्ज्वल हो, गौरवमय हो
जग-विस्मय हो
तुरत पलट दे विश्व-विधाता के अभिनय को
सेवा हो उद्देश्य, उसीमें उसका लय हो
ऐसा वह तन
जिसमें जीवन जिसमें यौवन
छूकर जिसको शूल फूल हो, रज कंचन हो
ऐसा तन हो

ऐसा मन हो
जो उज्ज्वल हो, शांत-सरल हो
पीर परायी देख मोम-सा तुरत तरल हो

धीर प्रबल हो
काल-गाल में बैठ हासमय गान-चपल हो
नश्वरता में जो पल-पल दे प्राण नवल वो

मोहक छवि हो
मधुर मनोहर दुर्लभ छवि हो
जीवन-नभ का ज्ञान-किरणमय उज्ज्वल रवि हो

भाव-सुरभि हो
काव्य-वस्तु जिससे पाता नित नूतन कवि हो
जो शुचिता का साथी दुर्व्यसनों का पवि हो

स्नेह-सुछाया
बिछा-बिछा दे सबको छाया
शीतल कर दे व्याकुल जग की जलती काया
जहाँ समाया

विश्व-मैत्री का विमल भाव, ममता, अति माया
जिसके सब अपने हों, कोई हो न पराया
ऐसा मम मन
लुटा किरण-कण विहँसा जग-वन
दृढ़ कर दे जन-जन के अपनापन-बंधन को
ऐसा मन हो
वह जीवन हो
जो यौवन बन छाये जग में
अमर ज्योति हो विश्व-विपिन के तममय मग में
खूँ रग-रग में
खौल रहा हो स्वाभिमान का, सब अग-जग में
क्रांति-क्रांति मच जाती हो जिससे पग-पग मे
वह लघु जीवन
आप हो निधन जग की निधि बन
अक्षय युग-युग रह जाये जो जीत मरण को
वह जीवन हो

ज्योतिर्गीत

मैं जलता हुआ चिराग

छोटी-सी मेरी देह
थोड़ा-सा मुझमें स्नेह
पर मेरी लघुता रोज
आलोकित करती गेह

मेरे प्राणों की जोत
ज्योतित करती जग-बाग
मैं जलता हुआ चिराग

नभ-सर मे चंद्र-सरोज
उफना उज्ज्वलता ओज
बरसा दूधों की धार
धोता दुनिया को रोज

वह मेरे आगे दीन
उसके उर में है दाग
मैं जलता हुआ चिराग

मेरे मन का मल-भार
ज्वाला मे जलकर छार
मेरी लघुता में लीन
उस सूरज का संसार

संध्या गर्वित मन मौन
पहनाती प्रतिनिधि पाग
मै जलता हुआ चिराग

मैं क्यों लघु, मैं क्यों हाय,
जग मे होऊँ निरुपाय
जो बुझते जलकर खूब
वे सफल-साध मन-काय

मैं विश्व बना दूँ छार
इतनी है मुझमें आग
मैं जलता हुआ चिराग

वह सोया एक मजार
मैं उसका मन साकार
जिसको पाने में मौत
अब तक आयी है हार

जग सोकर खोता हाय,
मै जग को पाता जाग
मै जलता हुआ चिराग

वर्ष शेष का गान

आज वर्ष की शेष किरण रे
सजा समाधि क्षितिज पर अपनी
नूतन को कर रही वरण रे
मलिन अरुण-मन
मलिन सरित का पुलिन, तरुण वन
एक-एक कण करुण, करुण तृण
आज याद सुख-दुख की बैठी
आँखों मे इन प्रबल वरुण वन
आज श्रांत मन, क्लांत सुकाया
अंत प्रबल गति, शांत चरण रे
आज वर्ष की शेष किरण रे

शेष गान यह
अमित स्नेहमय शेष दान यह
आज वर्ष का शेष ध्यान यह
मधुर नवागम का स्वागत पर
स्मृति-समाधि पर विकल प्राण यह
जीर्ण पुरातन की छाती पर
चिर नूतन के तरुण चरण रे
आज वर्ष की शेष किरण रे

एक वर्ष वह
कितने सुख-दुख अश्रु हर्ष वह
अमित पतन नित नवोत्कर्ष यह
जीवन के दर्पण में विंबित
उज्ज्वल उन्नत नवादर्श वह
स्मृति-मंदिर में दीप-शिखा-सा
जलने को ले रहा शरण रे
आज वर्ष की शेष किरण रे

विदा पुरातन
नूतन के वर दूत अमर-मन
ऋणी तुम्हारा चिर जग-जीवन
याद तुम्हारी अमर सत्य ही
परिवर्तनमय अक्षय निधि बन
हे महान, बलिदान तुम्हारा
गतिमय, जग-दुख-क्लेश हरण रे
आज वर्ष की शेष किरण रे

सदा पुरातन
गढ देता हम सबका नूतन
नूतन जीवन, नूतन तन-मन
'कल' पर खड़ा 'आज' हम सबका
उज्ज्वल उन्नत मुखर मुदित मन
यही सृष्टि का नियम चिरंतन
नव - जीवनमय मौन मरण रे
आज वर्ष की शेष किरण रे

निर्धन डालों पर खिले फूल

निकले कोंपल

मंजरियो पर फल रहे झूल

कोमल - कोमल

मस्ती में सुध-बुध सभी भूल

गाती कोयल

उड़ गयी धरा से जीर्ण धूल

दूबें झलमल

हँसता नभ, हँसता सारा जग

सुषमा का, छवि का बिछा जाल

यह नया साल

वे सोने के दिन रजत-रात

सब बीत गयीं

अब नये भाव, अब नयी बात

सब रीत नयी

सुख-दुख नूतन, नव घात-पात
सब गीति नयी
नूतन मन - यौवन, नया गात
नित प्रीति नयी
नित नव विकास, नित नव प्रकाश
नित नये चरण, नित नयी चाल
यह नया साल

जन-जन में नव-जीवन भर दो
हे चिर सुंदर
जीवन को चिर यौवन वर दो
हे मानसहर
यौवन का उज्ज्वल मन कर दो
हे चिर सुखकर
मन में भावों का धन धर दो
हे जग दुखहर

निर्धन डालों पर खिले फूल
निकले कोंपल
मजरियों पर फल रहे झूल
कोमल - कोमल
मस्ती में सुध-बुध सभी भूल
गाती कोयल
उड गयी धरा से जीर्ण धूल
दूबें झलमल
हँसता नभ, हँसता सारा जग
सुषमा का, छवि का विछा जाल
यह नया साल

वे सोने के दिन रजत-रात
सब बीत गयीं
अब नये भाव, अब नयी बात
सब रीत नयी

सुख-दुख नूतन, नव घात-पात
सब गीति नयी
नूतन मन - यौवन, नया गात
नित प्रीति नयी
नित नव विकास, नित नव प्रकाश
नित नये चरण, नित नयी चाल
यह नया साल

जन-जन में नव-जीवन भर दो
हे चिर सुंदर
जीवन को चिर यौवन वर दो
हे मानसहर
यौवन का उज्ज्वल मन कर दो
हे चिर सुखकर
मन मे भावों का धन भर दो
हे जग दुखहर

आकांक्षा-गीत

हम फूल होवें

सत्य-पथ में जाँय बिछ

निर्मूल संकट - शूल होवें

ज्ञान का परिमल मधुर हो

दया-सिंचित सजल उर हो

सत्य की शोभा अमित

सुविवेक की छवि अति रुचिर हो

नम्रता-नत-सुरभि, जग मे

हम सुमंगल मूल होवें

फूल होवें

मलिन मन खिलकर सुमन हो
सफल तरु का तुच्छ तन हो
हासमय, शुचि वासमय
पाकर हमें यह विश्व-वन हो
स्रोत शुचिता का बहा—
जग के कलुषमय कूल धोवें
फूल होवें

हम बिंधें होवें सुमाला
उर अनेको हों उजाला
फल लगें, पक जायँ तो
कर दें क्षुधित की शात ज्वाला
सजल स्मृति होवे अमर
झड़कर कभी जो धूल होवें
फूल होवे

●

जगत के चिर अगम हिय की
थाह पा लूँ, द्वार जा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

सुख-किरण के हास में
जग मुग्ध फूला
दुख-निशा आभास में
पग क्षुब्ध भूला
आश के उल्लास में
चिर लुब्ध भूला
ज्योतिमय सुख जीत लूँ, दुख-
बादलों से हार खा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

नित नये ही घाव से
हो हृदय जर्जर
नित नये ही चाव से
हो विकल अंतर

नित विमोहक भाव के
सोते पड़ें झर
बज उठे चिर मूक मानस-
वीण के सब तार, गा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

सीख हँसना फूल से
कुछ काल हँस लूँ
विश्व विहँसा, शूल से
मैं स्वय फँस लूँ
मृत्यु-जीवन कूल से
बन स्रोत भँस लूँ
प्यार भर जग के गले मे
गीत का मृदु हार डालूँ
जग का प्यार पा लूँ

जगत के चिर अगम हिय की
थाह पा लूँ, द्वार जा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

सुख-किरण के हास में
जग मुग्ध फूला
दुख-निशा आभास में
पग क्षुब्ध भूला
आश के उल्लास में
चिर लुब्ध भूला
ज्योतिमय सुख जीत लूँ, दुख-
बादलों से हार खा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

नित नये ही घाव से
हो हृदय जर्जर
नित नये ही चाव से
हो विकल अंतर

नित विमोहक भाव के
सोते पड़ें झर
बज उठे चिर मूक मानस-
वीण के सब तार, गा लूँ
जग का प्यार पा लूँ

सीख हँसना फूल से
कुछ काल हँस लूँ
विश्व विहँसा, शूल से
मैं स्वय फँस लूँ
मृत्यु-जीवन कूल से
बन स्रोत भँस लूँ
प्यार भर जग के गले मे
गीत का मृदु हार डालूँ
जग का प्यार पा लूँ

मैं आया सुंदर वसंत बन
मुझमे नव जीवन, नव यौवन
मैं चिर साहस का सहचर रे
सदा उल्लसित, सदा मुदित मन
भरी भीड भावों की मन मे
मचा उमंगों का गुरु कलरव
मैं विधि का वरदान मधुर नव

मैं नूतन का राग चिरंतन
प्रगति नित्य करती पद-वंदन
इन्ही बाहुओं में बैठे रे
स्वर्ग सैकड़ों, सौ-सौ नंदन
जाग पडेगा जीर्ण जगत यह
मुझसे पाकर यौवन आसव
मैं विधि का वरदान मधुर नव

मैं भविष्य का भव्य मुकुर रे
संयम और शक्तिमय उर रे
सदा ध्वनित स्वर में है मेरे
नित्य सत्य का शाश्वत सुर रे
मेरी सतत साधना से ही
जग में नव-नव युग का उद्भव
मै विधि का वरदान मधुर नव

गीत

तुम पत्र - बहुल वर विटप
और मैं क्षीण उसीकी छाया हूँ
मै बिना तुम्हारे कहाँ नाथ
तुम सत्य और मैं माया हूँ
तुम अगम-सिंधु, मैं तुच्छ बिंदु
तुम प्रखर प्रतापी रवि महान्
तुमसे भासित मैं क्षुद्र इंदु
तुम चिर चेतन मय प्राण, किंतु
मै तो मिट्टी की काया हूँ
मैं लघु निर्झर, तुम गिरि गह्वर
मैं शात सरित शिशु, तुम सागर
तुमसे ही आदि, तुममे ही अंत
तुम काल स्रोत, मैं क्षण नश्वर
तुम सकल सृष्टि की नींव, एक
मैं उसका पतला पाया हूँ

स्वदेश-संगीत

मेरे प्यारे भारत देश
सुंदर सुखकर मनहर वेश

ये हिमगिरि के रजत शिखर रे
किरण-निकर-से रहे निखर रे
जिनकी महिमा
गौरव गरिमा
युग-युग से हैं रहीं बिखर रे
चकित विश्व की आँखें जिन पर
आदि काल से हैं अनिमेष
मेरे प्यारे भारत देश

फुल्ल कमल-दल शोभित सरवर
सरल चपल चित मुखरित निर्झर
कर कुछ इंगित
तरल तरंगित
दौड़ रहीं नदियाँ हैं खरतर
शांत सिंधु पावन पद छूकर
पाता मन में तृप्ति अशेष
मेरे प्यारे भारत देश

यह मखमल-सी मृदु हरियाली
सुमन-भार से नवती डाली
कोकिल कूजन
मधुकर गुंजन
चिड़ियों की तानें मतवाली
जगा प्राण में निशि-दिन देतीं
स्वर्गिक सुख का शुचि आवेश
मेरे प्यारे भारत देश

सुषमा जीवन ज्योति जगाती
आँगन में ऊषा मुसकाती
रश्मि-माल से
सजा भाल ये
संध्या फूली नहीं समाती
यह निर्मेघ गगन की छाया
भरतीं नव-नव भावोन्मेष
मेरे प्यारे भारत देश

यह पावस की धारा झमझम
यह नीलम-सा तारा चमचम
रात श्याम-तन
प्रात हेम मन
दूबों पर ज्यों पारा शबनम
कौन वह कवि जो गा-गा कर
कर दे शोभाओं को शेष
मेरे प्यारे भारत देश

जीवन यौवन ज्योति अनंत
कहाँ लुटाता मुदित वसंत
किसे सजाते
किसे रिझाते
पावस, ग्रीषम, शिशिर, हेमंत
कहाँ दूध की धोयी रातें
हँसता ऐसा कहाँ दिनेश
मेरे प्यारे भारत देश

सुख से भरा तुम्हारा आँगन
सरित सरोवर गिरि वन उपवन
निर्मल जल है
मधुमय फल है
खेतों मे हैं भरे शस्य-धन
जीवन में सुख शाति सदा है
कब किसने जाना क्या क्लेश
मेरे प्यारे भारत देश

अमर सभी सुख - मूल यहाँ हैं
नाज अमित फल-फूल यहाँ हैं
झकमक दिनकर
चकमक हिमकर
हीरा-कचन धूल यहाँ हैं
सुख-शोभा का सौम्य स्वर्ग है
ललचाता है सदा सुरेश
मेरे प्यारे भारत देश

प्रथम भाव का झरना छूटा
मानव-मुकुल यहीं पर फूटा
ज्ञान सुपरिमल
सत्य समुज्ज्वल
सारे जग ने इससे लूटा
प्रथम यहीं से इस दुनिया को
मिला सभ्यता का संदेश
मेरे प्यारे भारत देश

दूर तिमिर का घोर हुआ था
प्रथम ज्ञान का भोर हुआ था
निर्जन वन में
पावन क्षण में
वेद मुखर मन-मोर हुआ था
वे मुनि-मन के दीप आज भी
करते सच्चा पथ-निर्देश
मेरे प्यारे भारत देश

मानवता का बोध हुआ था
नित्य सत्य का शोध हुआ था
नश्वर जीवन
क्षणिक मनुज-मन
इसका यहीं विरोध हुआ था
बता गये थे जीवन का पथ
स्वयं जन्म लेकर सर्वेश
मेरे प्यारे भारत देश

भारत तू जग ताज हमारा
वर दीपक सुख-साज हमारा
उज्ज्वल गौरव
सुखमय सौरभ
विश्व - बाग का नाज उजारा
बल विज्ञान ज्ञान गौरव गुरु
ऋणी तुम्हारा चिर सब देश
मेरे प्यारे भारत देश

जग मे ऐसा कौन अन्य है
सुंदर, सुखकर, शांतिजन्य है
तुम में होता
तुम में खोता
उस मानव का जन्म धन्य है
पूत तुम्हारा होकर पुलकित
प्राण हमारे मेरे देश
मेरे प्यारे भारत देश

हरने को जंजाल तुम्हारे
लुटे अनगिनत लाल तुम्हारे
अपना तन-मन
कर सब अर्पण
गले दे गये माल तुम्हारे
कर्म धर्म की पुण्यभूमि तुम
जन्मभूमि तुम वीर स्वदेश
मेरे प्यारे भारत देश

तेरी मिट्टी से यह तन है
जीवन है यौवन है मन है
स्नेह तुम्हारा
सदा सहारा
करुणा से हिय में कपन है
सच्चा तनय तुम्हारा होकर
जी पाऊँ, हो पाऊँ शेष
मेरे प्यारे भारत देश

●

वसंत का गीत

सजी सलोनी प्रकृति परी रे

हँसे कोंपलों में तरु कानन
फूल-फूल में उपवन-उपवन
मंद गंध से अंध पवन रे
बौर-बौर में विहँसा वन-बन
हँसा नीलमों में नीला नभ
धरा दूब में हरी-हरी रे
सजी सलोनी प्रकृति परी रे

कुंज-कुंज में कोकिल कूजन
फूल-फूल में मधुकर-गुंजन
हृदय-हृदय मे भरी उमंगें
मस्ती में बूड़ा है मन-मन
गीत-गीत से मुखरित दिक्-दिक्
किरण-किरण में स्वर-लहरी रे
सजी सलोनी प्रकृति परी रे

एक-एक क्षण में जीवन है
एक-एक कण में यौवन है
भरा पुलक है प्राण-प्राण में
प्यार-प्यार का पागलपन है
आज क्षुद्र रजकण से लज्जित
नंदन की मणि - मंजु-लरी रे
सजी सलोनी प्रकृति परी रे

०

नये साल का गीत

यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

सो गया सदा को वृद्ध साल
कल की किरणों के साथ-साथ
निशि गयी चाँदनी-कफन डाल
उसकी समाधि पर दीप-प्रात
बरसा दूबों पर अश्रु-ओस
रोया रजनी भर विकल व्योम
नूतन निधि से भर आज कोष
विहँसा वसुधा का रोम-रोम
शस्यों मे सिहरी नयी साँस
डोली सुंदरता पात-पात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

रे, प्राण-विहग अब छोड़ नीड़
दे त्याग सुप्ति की गोद मधुर
जग में किरणों की लगी भीड़
हँस उठे कली के चित्त-मुकुर
व्याकुल खग-कुल पा नये गान
आकुल किरणों ले नयी जोत
नव-बल से निर्झर वेगवान
नव-जीवन से जग ओत-प्रोत
हिलती सरिता में नयी लहर
कह रहा समीरण नयी बात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

सुख-दुख का वह इतिहास छोड़
जो हास-अश्रु मे सुप्त मौन
उत्थान-पतन को रे, न जोड़
प्राणों के जिनसे भरे कोण

यह भूत भविष्यत् की रेखा
तेरा पल भर का वर्तमान
बीता दिन इन आँखों देखा
अब आनेवाले दिन अजान
तुझको बढ़ चलना है प्रतिपल
उस ओर नहीं जो तुझे ज्ञात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

निशि-वासर के दो पंख खोल
उड़ता जाता गतिमान समय
लुटतीं कितनी निधियाँ अमोल
मचते कितने ही घोर प्रलय
बुद्बुद् से जाते फूट-फूट
जग-आँगन में कितने जीवन
कितनों के शैशव लूट-लूट
लहरा उठता दुर्दम यौवन

८१

वह नही देखता कभी लौट
दुख के दिन सुख की सरस रात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

जग मे प्राणों को मिले पाँव
चलते चलना ही काम एक
थोड़ी-सी सुख की खड़ी छाँव
दुख-दोपहरी से जिसे देख
यह जन्म-मरण तक की दूरी
तै कर देना ही है जीवन
पथ कंटकमय, पथ है पंकिल
कर सबल प्राण, धर प्रबल चरण
अब अपने सिमटे पंख खोल
उड़ जा किरणो के साथ-साथ
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

रे, छोड़ नीड़ अब पंख खोल
उड़ जा दुनिया में दूर-दूर
नवयुग के मधुमय बोल बोल
छिटका दे जग में नया नूर
दे बिछा गीत का नव वितान
दारुण दुख-जर्जर जगती पर
प्राची पर विहँसा दे विहान
गा, भर नभ का सूना अंतर
गा गीत जागरण के, गति के
जीवन के, द्युति के, उठा गात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

सरिता में लहरें उठीं लहर
किरणों ने अग-जग लिया चूम
वह दौड़ पड़ा चंचल निर्झर
अपनी मस्ती में झूम-झूम

बस एक नीड़ में पड़ा मौन
तू ही तंद्रालस जडित प्राण
तेरे कंठों से छीन कौन
ले गया तान, ले गया गान
उड़ किरणों के आगे-आगे
रह जाये पीछे पड़ा वात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

जाना है तुझको बहुत दूर
गाना है तुझको बहुत गीत
करने हैं बंधन बहुत चूर
हैं बहुत हार, हैं बहुत जीत
पाना है जग का बहुत प्यार
खोना है जी का बहुत भार
करने हैं मन के मुक्त द्वार
भरने हैं अनुभव से अपार

खानी है ठोकर कठिन-कठिन
सहने है कितने घात-पात
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

जीवन है गति का प्रबल स्रोत
जिसमे सुख-दुख की लोल लहर
है घोर तिमिर, है दिव्य जोत
उत्थान-पतन, मधु मधुर, जहर
तुमको है बहुत यहाँ गढना
मन की चीजों को तोड़-फोड़
गिर-गिर कर फिर-फिर है चढना
बढ चलना त्तण का साथ छोड
चल कदम मिलाकर किरणों से
ले मिला वायु के साथ हाथ
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

सुख-दुख की लहरों में अशात
खेओ जोवन की नाव धीर
बढ चलो न जब तक हो दिनान
इस समय-सिंधु का हृदय चीर
नित नव-नव रूप लिये फूलो
शूलों में बनकर दिव्य फूल
जग का कोना-कोना छू लो
जीवन-सरिता का बढा कूल
बढ गयीं रश्मियाँ बहुत दूर
ले, दौड़ पकड़, बढ साथ-साथ
यह आज वर्ष का प्रथम प्रात

•

गीत

कोष में जिसके सुकोमल कामना कल्याण की नव
फूट पडने को विकल नित कर रहे हों घोर कलरव
वह कली हूँ खिल पड़ूँगा कल अनोखा फूल होकर
आ रहेगा हास से मम इस धरा पर स्वर्ग अभिनव

भँस रहा जो व्योम-मरु में एक टुकड़ा मेघ श्यामल
हृदय मे अपने छिपाये अमित करुणा-बूंद उज्ज्वल
क्षुद्र टुकड़ा मैं वही, मिट जाऊँगा वन सजल जलकण
जी उठेगा पा मुझे वरदान-सा प्यासा धरातल

चुप पड़ा संगीत जिसमे वह अलस-सा तार हूँ मैं
निकल पडने को विकल-मन मलय उर की धार हूँ मैं
ज्योति मुझमें वह छिपी जिससे जगत तम रहित होगा
विश्व का आशा-भरोसा शक्ति का आधार हूँ मैं

स्वर्ग-शिशु उतरा धरा पर दिव्य मैं वरदान होकर
विश्व का अभिमान होकर प्राण का अरमान होकर
मै करूँगा स्वयं जग में युग नया निर्माण कल ही
डाल जाऊँगा नयी मैं जान खुद वलिदान होकर

तारक-संगीत

तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल
नीले नभ के आँगन में नित
करते रहते झलमल-झलमल

जब श्याम-परी चुप-चुप आती
दुनिया थककर सो जाती है
दुख-दर्द सभी सुस्ताते हैं
रजनीगंधा मुसकाती है
सोये जग को क्या कहो नया
संदेश सुनाते सरल-सरल
तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल

है यहाँ फूल खिलते अगणित
हँस-हँस कर मृदु मुसकाने को
तुम मौन तपी-से ध्यान-निरत
क्या यही गाँठ सुलझाने को
मेरी आँखों को भाते हो
नित नवल-नवल कोमल-कोमल
तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल

है यहाँ भरे दुख-दर्द, रुदन
जग की गलियाँ सब गीली है
छल-कपट, द्वेष मद की मैली
विष-बूँदें सबने पी ली है
तुम कैसे हो कह दो न सखे
यों शांत, सुखी, अविचल, निश्छल
तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल

तुम सुंदरतर, तुम उज्ज्वलतर
तुम दिव्य प्रभामय मानस-हर
तुम हो स्वर्गिक निधियाँ अमोल
रजनी की शुभ-कामना-निकर
जग के मैले मानस-पट में
भर दो पावन प्रकाश-परिमल
तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल

हम क्या समझें तव रजत हास
हम क्या समझें तव मूक भाष
हम चिर अजान, हम चिर मैले
अज्ञान मलिनता के निवास
मेरे जीवन का अंधकार
तुम धो दो मधुमय धवल-धवल
तुम कौन मौन उज्ज्वल-उज्ज्वल

•

अरूप का गान

निखिल जग के प्राण हो तुम

नद-नदी, सागर, सरोवर

विजन वन बहु नगर निर्झर

नील नभ शशि सूर्य तारे

पवन पावक गहन भूधर

ये सभी रचना तुम्हारी

शक्तिमान महान् हो तुम

निखिल जग के प्राण हो तुम

मिला तुमसे ही हमें है
देव-दुर्लभ मनुज-जीवन
जगत पर अहरह तुम्हारा
बरसता अतुलित दया-घन
क्षुद्र रज-कण भी न वंचित
नाथ, करुणा-खान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

मुक्ति हो, मधु आस भी हो
दूर हो, अति पास भी हो
स्वामि हो संसार के सब
प्रेम के पर दास भी हो
मृत्यु-सा अभिशाप दारुण
जन्म-सा वरदान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

ज्यों न मिहदी पत्तियों की
दीख जाती यों सुलाली
हो छिपे इस भाँति तुमसे
है न कोई स्थान खाली
है न कोई रूप भी, फिर
रूपमय मतिमान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

अनल में हो, हो अनिल मे
मलय-मारुत में, सलिल में
वास करते हो खुशी से
हम सबों के साफ दिल मे
तिमिर के अंतर अतल में
ज्योति में द्युतिमान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

गान महिमा के अनूठे
गा रहीं चिड़ियाँ तुम्हारी
मत्त होकर हैं लुटाते
फूल यश की वास प्यारी
सृष्टि में सर्वत्र सबके
एक ही बस ध्यान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

पिता हो, सतान हूँ मैं
दास हूँ मैं, नाथ तुम हो
निपटतर अज्ञान हूँ मैं
हाय, आकर हाथ तुम दो
नीचता की खान मैं, पर
दयामय भगवान हो तुम
निखिल जग के प्राण हो तुम

•

गीत

दीप दो
है न ;वेला
मै अकेला
कष्ट क्योंकर
जाय झेला
घोर तम है
जोर कम है
भय अनेकों
पथ विषम है
शक्ति-मोती से भरा अब
देवता, हिय-सीप दो
दीप दो

हाथ दो
समय - सागर
अगम, दुस्तर
वासना की
वायु खरतर
नाव - जीवन
हाय,लघु-तन
ढेव पागल
विकट कंपन
डाँड लूँ, पतवार को:
थाम ले, बस, स
हाथ दो

गान दो
घोर निर्जन
शून्य भीषण
प्राण कातर
निबल मम मन
दूर मेरा
है बसेरा
क्या पता कब
हो सवेरा
मैं तुम्हें गाता रहूँ—
खेता रहूँ यह ध्यान दो
गान दो

जीत दो
विघ्न सारे
सतत हारें
भोर हो जा-
कर किनारे
साधना-धन
तुच्छ तन-मन
दे तुम्हें हो
धन्य जीवन
चरण-रज में जा मिलूँ मैं
वह प्रबल परतीत दो
जीत दो

•

गीत

काले बादल
अपना जीवन देकर जग का
जीवन कर देते हैं शीतल
काले बादल

दीपक उज्ज्वल
ज्योतित करता जग का आँगन
जला-जला अपने को प्रतिपल
दीपक उज्ज्वल

शलभ छार हो
जीवन-मरु में स्वर्गिक निधि-सा
नित-नित जाता अमर प्यार को
शलभ छार हो
सकल सार खो
अपने, नन्हें नाज नित्य ही
हरते जग के भूख-भार को
सकल सार खो

मुग्ध सुमन मन
सौरभ का संसार लुटाकर
करते हैं जग का सुख-साधन
मुग्ध सुमन मन
रे, मेरे मन
खो न बना अपने को अपना
जग को दे जीवन दे जीवन
रे, मेरे मन

●

मेघ-गीत

श्याम घन रे
तिमिर तन पर मोतियों का
सजल मृदु अभिराम मन रे
श्याम घन रे

चित्र-से तुम हो न चित्रित
व्योम-मरु में
मित्र कज्जल-भार विस्तृत
सोम-तरु में
अमित अमृत
पान कर तेरा जगत यह मरण-विस्मृत
बरसते हैं प्राणमय तेरे अमित अविराम कण रे
श्याम घन रे

प्राण तेरे बो रहे हैं

प्राण पग-पग

दान तेरे ढो रहे हैं

क्या न अग-जग

त्राण के मग

त्याग से तेरे हरे है मीत लगभग

खो रहे जग के लिये जीवन-रतन सुललाम तन रे

श्याम घन रे

चेतनामय चपल जीवन

हास मुखरित

कर रहा है फूलमय वन

वास वितरित

मधुर अगणित

जीवनों से नाज तृण से धरिणि पुलकित

उल्लसित सर सिंधु सरिता गहन कानन धाम धन रे

श्याम घन रे

एक मम असफल सुजीवन

विफल धन-जन

चाह से नित विकल वन-वन

भ्रात रे, मन

एक भी क्षण

मुक्त होता स्वार्थ का जो विकट बंधन

मीत, मेरे ही लिये क्यों है गया विधि वाम बन रे

श्याम घन रे

दूर कर दे प्यास मेरी

मीत मेरे

चूर कर दे आस सारी

गीत तेरे

चित्त ये रे

मौत से लड़ गीत गायें जीत के रे

सफल हो बलिदान होकर प्राण धन मन चाम तन रे

श्याम घन रे

०

गान

माँ, दुर्बलता दूर भगा दे

बुरी वासनायें अंतर की
संयम से सो जाये पल में
छू न जाय अभिमान विभव का
उच्छृंखलता रहे न बल में
यौवन के चंचल अंचल में
अमिट धैर्य की छाप लगा दे

सेवा-भाव सदा छाया से
हो जीवन की इन चाहों में
तेरा तनय निरख ले तुझको
दुखियों के दुख में, आहों में
व्यापक हो यह भाव अमर हो
जग में नूतन ज्योति जगा दे

•

आकांक्षा-गीत

मुझमें हों रवि-से ज्ञान-ज्वाल
मेरी द्युति से आलोकित हो
वसुधा का वक्षस्थल विशाल
मुझमें हों रवि-से ज्ञान-ज्वाल

मेरी किरणों का मधुर हास
भर दे कण-कण मे हास-लास
विकसा दे सबके हृदय-कमल
हर रोग-तिमिर का विकट जाल
मुझमें हों रवि-से ज्ञान-ज्वाल

धरती के विगलित धन समेट
धरती ही को दूँ पुनः भेंट
बरसा करुणा की सहस धार
तृण, तरु, प्राणी होवें निहाल
मुझमें हों रवि-से ज्ञान-ज्वाल

धन-राशि हमारी लगे काम
दुखियों को देने सुख-विराम
मेरी उदारता से होवे—
उज्ज्वल, उन्नत जग का सुभाल
मुझमें हों रवि-से ज्ञान-ज्वाल

•

मेरे गीत

भाव चिर-संचित हृदय-धन
प्राण हैं रे, गान मेरे

रात काली
साँझ-सुंदरि के अधर से पोंछ लेती मधुर लाली
शांतिमय शोभा निराली
रोज रचती नील नभ पर तारिकाओं की दिवाली
खोल अपनी श्याम अलकें
श्याम-परियाँ चूम लेतीं सुप्त जग की मिलित पलकें
बेखबर जब विश्व सोता
सब तरह का ज्ञान खोकर
कल्पना के स्वप्न-पुर से
स्वर्ग-शिशु साकार होकर
नित्य नव-नव भाव के जाते मुझे वरदान दे रे
गान मेरे

उषा रानी

स्वर्ग से लाकर लुटाती इस धरा पर दिव्य वाणी
मुग्ध अग-जग मुग्ध प्राणी
दौड़ जाती है नसों में प्राणमय खूँ की रवानी
विहग-कुल मधुगान आकुल
पाँखुरी का व्यूह देता तोड़ कलि का प्राण व्याकुल
फूट है सर्वत्र पडती
ज्योति-जीवन की सुरेखा
फूल पर गाता मधुप-कुल
प्यार का लेता सुलेखा
जागरण जाता हमारे कंठ में वर गान दे रे
गान मेरे

दिव्य दिनकर

किरण-कर से छू जगत का नित्य देता स्वर्ण तन कर
दिव्यता से कवि-हृदय भर
विश्व का कर्तव्य-पथ करता प्रकाशित है नयन पर

दिन हमारे खो गये जो
आज के इस रिक्त अंचल मे अमर निधि बो गये जो
उमड़ते आलोक में इस
वे लगाते रोज फेरा
भूत के वे दूत ही तो
'आज' गढ़ देते हमारा
गान-माला मे सजाता मैं उन्हें अरमान से रे
गान मेरे

व्योम विस्तृत
भावना निःसीम भरता, साधना का पथ-परिष्कृत
अनवरत मन-वीण झंकृत
सत्य शुभ का नाद जिसमें गूँजता दिन-रात अविकृत
शात यह नि.सीम सागर
नित्य देता भाव में उन्माद की गंभीरता भर
फूल इनमें वास भरते
विहग देते स्वर मनोहर

गति इसे देते अचल की
चीर छाती चपल निर्झर
मैं उन्हें करता सजीला हृदय के अभिमान से रे
गान मेरे

गान मेरे ,
क्षणिक जग को हैं मिले मानो अमर कुछ दान-से रे
सतत अपने प्राण से रे
प्राणमय करता इन्हें मैं, अमर ये, गतिमान ये रे
जीत पाया है मरण को
कौन नश्वर, अमर बनकर, नाश के वलमय चरण को
अमर होंगे गान में इन
इस जगत में प्राण मेरे
ज्योति हो युग-युग जलेंगे
भावना के दान मेरे
तन न होगा, छा रहेंगे गान सुर-सुवितान-से रे
गान मेरे

लास इनमें
जग-विपिन के भ्रांत पथिको का करुण आभास इनमे
विगत युग की वास इनमें
भाग्य के भावी तपन का मधुर उज्ज्वल हास इनमें
दीप हैं ये तिमिर मग के
प्राण के संबल, नयन की ज्योति, वज्र है निबल पग के
सींचती करुणा इन्हें है
कामना के शुभ मुकुल है
है भरा संयम सुसौरभ
त्याग के मृदु फल अतुल हैं
गीत ये संदेश नवयुग के, जगत-कल्याण केरे
गान मेरे

०

प्रगति-गीत

आगे चल, चल आगे चल
शंका भय सब त्यागे चल
चल, आगे चल

बाधा जो अड़ी खड़ी हो
मग में, सारे अग-जग में
कठिनाई बड़ी कड़ी हो
अवसाद भरा रग-रग में
संकल्प हिमालय का हो
तू दृढ रह, भय भागे, चल
चल, आगे चल

पग-पग में प्राण हरा हो
उत्साह न म्लान जरा हो
हो लगन लगी आगे की
स्वर में जयगान धरा हो
काँटें हों आग बिछी हो
हँस दे, जीवन जागे, चल
चल, आगे चल

दे बिछा मरण जो अंचल
मत तरुण चरण हो चंचल
विस्मित हो विश्व-विधाता
सृष्टि हो पल-पल टलमल
मुँह में हो गीत अधर पर
मुस्कान, कदम आगे, चल
चल, आगे चल

०

दीपोत्सव-गान

दीप माला

आज 'मावस के हृदय में भर रही पल-पल उजाला

दीप माला

रात झलमल

ज्योति-सौरभ-भार से मृदु वात टलमल

भाव की मंदाकिनी से आज मन मुख गात कलकल

आज तम के देश में द्युति का लगा है पुण्य मेला

दीप माला

चुप सितारे

हाट अपनी अचल मृदु छवि का पसारे

व्योम नीलम-माल, धरती हृदय में द्युतिमाल धारे

आज नंदन-वन अकिंचन निधन रजकण से अकेला

दीप माला

दूब कोमल
हरित तन पर डाल निशि का श्याम अंचल
नभ-नयन की अश्रु-मुक्तायें रही हैं बीन केवल
स्वर्ग-वंचित जो धरा की गोद मे वह कब अकेला
दीप माला

आड़ में पर
दुःख की छाया रही है सिहर कातर
तन मलिन, जर्जर हृदय, चिथड़े भरे कुछ जीर्ण-से घर
भाग्य का आकाश दुख के वादलों से घोर काला
दीप माला

मनुज - जीवन
दुःखमय, हिंसा घृणा मद का सघन वन
स्वार्थ से जर्जर सतत रे, वासना से चिर मलिन मन
हाय, इन हिय की गुफाओं में हँसेगा कब उजाला
दीप माला

यह दिवाली
भाव-सुमनो से हृदय की भर सुडाली
आ गयी आह्वान लक्ष्मी का लिये करती उजाली
ज्योति-पारावार में बूड़ो, बहा दो कलुष काला
दीप माला

आज आओ
ज्योति अपनाओ, प्रणय का राग गाओ
इन शिखाओं में हृदय की वासना मैली जलाओ
भूल कल की याद मतवाले बनो पी ज्योति हाला
दीप माला

नूतन का गान

हे नूतन

अभिनंदन, पदवंदन

उजड़ा उर-नंदन शुष्क भाव की धारा

हतप्रभ हो चला हाय, आँखों का तारा

लड़कर दम भर अपनी टेढ़ी किस्मत से

सोया साहस रे, थका-मरा-सा हारा

खोया आशा का कंपन

हे नूतन

हम चिथड़ों में लिपटे रहते हैं भूखे

लोहू देकर पाते दो टुकड़े रूखे

हम कृष तन, दुर्बल मन, जीवन से ऊबे

दिल में ज्वाला आँखों के सागर सूखे

दूँ फूल कि नीरस क्रंदन

हे नूतन

मुँह बंद न रो पाते हैं कभी मुसीबत
हैं जिये जा रहे मर-मर यही हकीकत
धरती माता की गोद गगन की छाया
दो साँस लिये लेते हैं यही गनीमत
तुम मुक्त, यहाँ दृढ़ बंधन
हे नूतन
हम चिर प्यासे चातक, तुम करुणा-घन हो
हम जर्जर तन, तुम चिर दुर्दम यौवन हो
झोली मे वह अमृत भर लाओ, छींटो
इन मुर्दों में नव-प्राण, नया जीवन हो
आओ, लाओ परिवर्तन
हे नूतन
इन शुष्क नसों में खूँ की नयी रवानी
इस जीर्ण-शीर्ण तन में भर नयी जवानी
दोनों हाथों उल्लास लुटाते आओ
अब से जग की रच दो इक नयी कहानी
मिट जाये जीर्ण पुरातन
हे नूतन

सब रोग शोक संताप सदा को भागे
नवयुग हो, नयी ज्योति नवजीवन जागे
सब भीति भूत की विस्मृति में खो जाये
हम सबके तरुण चरण हों प्रतिपल आगे
भागे भय बाधा-बंधन
हे नूतन
तुम आओ फूलों में विकास बन महमह
परिमल परिपूरित द्युति-प्रवाह में बह-बह
उतरो किरणों के रथ से, पिक-कुल गाये
मरु के सिक्ताकण आज उठें यों कह-कह
जग नंदन रे, जग नंदन
हे नूतन
आओ जीवन का मंत्र नवीन सुनाओ
कर-पल्लव से मानस के वीण बजाओ
इस हाहाकार रुदनमय जगतीतल में
सुषमा का जाल बिछा सुख-धार बहाओ
हो दूर रुदन, दुख-पीडन
हे नूतन

तेरे चरणों से ज्योति-स्रोत वह फूटे
तम की कारा जग की युग-युग की टूटे
नवजीवन, नवयौवन, यौवन में गति हो
गति से बयार वह पगली पीछे छूटे
दुर्दम पद दुर्मद यौवन
हे नूतन

•

चेतन-गान

मैं चिर नूतन का राग लिये आया हूँ
नव तन-मन नव अनुराग लिये आया हूँ

नव ज्योति नयन में, मन में नव-नव आशा
नव भाव, नयी भाषा, नव-नव अभिलाषा
मैं क्रांति-दूत अक्लांत चरण, गढ दूँगा
जग की, जीवन की एक नयी परिभाषा

हाथों में विधि की वाग लिये आया हूँ
मैं चिर नूतन का राग लिये आया हूँ

मैंने देखा दुखिया आँखों का सागर
पीड़ित अंतर, चिर मलिन मूक मुख कातर

पथ अंतहीन, जीवन का दुर्वहबोझा
निर्वापित आशा-दीप, निबल पग थर-थर
उस दुख का दिल में दाग लिये आया हूँ
मैं चिर नूतन का राग लिये आया हूँ

इन दीप्तिहीन आँखों का हरकर पानी
चिर मूक कंठ में भर मधुमय वर वाणी
अंतर-मरु में उमड़ा उमंग का सोता
चरणों मे चाल लगा दूँगा तूफानी
मैं अखिल विश्व का भाग लिये आया हूँ
मैं चिर नूतन का राग लिये आया हूँ

मेरे पीछे है मृत्यु, सामने सिरजन
पाँवों में प्रलय, हाथ में हँसता जीवन
साँसो में आँधी, आँखों में अंबुधि है
उर के कोने में करुणा का मृदु कंपन
मैं सुधा, प्रलय की आग लिये आया हूँ
मैं चिर नूतन का राग लिये आया हूँ

●

गीत

क्या जग ने मुझको जाना
मैं तिल-तिल जलता रहा दीप-सा क्या आया परवाना

ज्वाला मेरी अपनी है
तुमको प्रकाश हम देते
काँटों का शाप हमारा
तुम वर फूलों का लेते
चाहा क्या दृग-सरिता में पीडा की प्यास मिटाना

अंतर ही तो छोटा है
भावना उदार हमारी
मेरी ममता का आँचल
भर ले दुनिया को सारी
सीखा आँधी उर में भर फूलों-सा हास लुटाना

बाहर से सागर लोना
अंतर रत्नों का आकर
तुम सुखी नहीं क्या होते
मुझमे कुछ ऐसा पाकर
जलते जीवन-मरु में भी इक कोना सजल सलोना

यह जलता जीवन-यौवन
काया का गुरुतर बंधन
रे, दूर-दूर उड़ जाता
चिर-मुक्त विहग-सा यह मन
यह है प्राणों की वाणी जिसको तुम कहते गाना

पापी तापी संतापित
है फिरा कौन, जो आया
दे सकी न किसको आदर
मेरे प्राणों की छाया
अपना क्या, जग के दुखसे झंकृत मेरी उर-वीणा

मेरा तो यह लघु-जीवन
दो दिन का रे, दो छिन का
जग-जीवन की धारा में
तिरता-सा मै लघु तिनका
चिर जीवन-राग सुनाकर मुझको तो है मर जाना
जग के पीड़ित अंतर को
मैं ने सब दिन सुहलाया
गाया हँस-हँस कर सुख में
दुख में रो-रो अकुलाया
जग ने तो खोया मैं ने यों उसे बनाया पाना
जग पर मेरा क्या हक है
पर मै तो जग ही का हूँ
क्या दूर कभी हो सकता
चाहे मैं दिल से चाहूँ
फिर जग ही सहज समझता क्या मेरी याद भुलाना
क्या जग ने मुझको जाना

०

गीत

मैं शेष रात का तारा हूँ
भावों का उमड़ा मेह चुका
मेरा सब संचित स्नेह चुका
जी की ज्वाला में जली जोत
मानो, लुट मेरा गेह चुका

अपने प्राणों का जला दीप
जग जीवन को देखा चाहा
अपने ही मन में डूब-डूब
जानें क्या-क्या लेखा चाहा
तम पर ? हाँ, तम पर हुई जीत
लेकिन द्युति से मैं हारा हूँ

मैंने सोयी दुनिया देखी
उसके जी में जागे अरमाँ

काया के निष्ठुर कारा मे
घुल-घुल कर जलती जग में जो

हँसते कितने ही मुग्ध फूल
लुटते शबनम से कितने मन
कुछ भूख लिये, कुछ हूक लिये
आकुल-व्याकुल जीवन-यौवन
जिसके आँसू का रिक्त कोष
मैं करुणा की वह धारा हूँ
मैं शेष रात का तारा हूँ

मैं रोया हँसकर गाया भी
कितना खोया, कुछ पाया भी?
पीड़ा के बोझ सदा ढोये
पायी करुणा की छाया भी?

जल-जल ही कर मैं हुआ छार
देखी दुनिया ने आँख खोल
मुझको कब किसने किया प्यार
फिर क्या जीवन का मोल बोल

जिसको प्यासों ने ठुकराया
मैं घूँट एक वह खारा हूँ
मैं शेष रात का तारा हूँ

भूली दुनिया को देख-देख
मैं अपने को पी गया आप
अब आज सका हूँ हल्का हो
ढो-ढो जीवन का निठुर शाप

तम में ही मेरा हुआ जन्म
तम में ही होने चला शेष
अब झूठ विहग के गान मीत
अब व्यर्थ किरण का मधुर वेष
द्युति से तुम ही युग-युग खेलो
मैं तो किस्मत का मारा हूँ
मैं शेष रात का तारा हूँ

•